AGPE THE ROYAL GONDWANA RESEARCH JOURNAL
OF HISTORY, SCIENCE, ECONOMIC, POLITICAL AND SOCIAL SCIENCE
ISSN (E): 2583-1348 | A Peer reviewed | Open Accsess & Indexed
Volume 05 | Issue 01 | January 2024 | www.agpegondwanajournal.co.in | Page No. 29-32

भगवद्गीता की वर्तमान समय में प्रासंगिकता एवं जीवन दर्शन

रवि कुमार मीना
सहायक प्रोफेसर - संस्कृत साहित्य
राजकीय महाविद्यालय, सिद्धमुख (चूरू), राजस्थान

सारांश:- वर्तमान दौर में पूरी दुनिया में अशांति फैली हुई है। मनुष्य ने चाहे जितनी भी खोज की है अपनी सुख सुविधाओं के लिए लेकिन फिर भी उसको कहीं भी उसे सकून नहीं हैं। भौतिक भोग की वस्तुओं के अनावश्यक संग्रह से उसे झूठा ही सुख मिल पा रहा हैं । फिर युवा वर्ग ही क्या प्रत्येक वर्ग तनाव में जीवन यापन कर रहा है। गीता गुम हुए सुख को पुनः आत्मिक रूप में लेन का कम करती हैं । आत्मा चेतन रूप है । आधुनिक युग में गीता के द्वारा संतुलित जीवन को उपचार देने की आवश्यकता है। गीता योग अध्यात्म एवं जीवन प्रबंधन का महत्त्वपूर्ण ग्रंथ है । आज के युवा को गीता का आत्मसात करने के लिए अर्जुन जैसा जिज्ञासा पात्र् बनना पड़ेगा क्योंकि भगवान श्रीकृष्ण ने गीता के अंतिम अध्याय में स्वयं कहा है कि गीता का रहस्यमय उपदेश किसी भी काल में तत्वरहित भक्तिविहीन और जिसकी सुनने में रूचि नहीं हैं और जो मेरे प्रति द्वेष भाव रखता हैं ऐसे लोगों को यह ज्ञान नहीं देना चाहिए। जो युवा गीता का गुरु के सानिध्य में श्रवण मनन करेगा वह मोक्ष रुपी परम लक्ष्य को भी प्राप्त कर सकता हैं।

मुख्य शब्द:- श्रीमद्भगवदगीता, रहस्यमय, कर्म-फल, धर्म- अधर्म, अन्तर्द्वन्द, नवरस, निमित्त मात्र,अनन्त, निष्काम, भक्ति भाव, स्थितप्रज्ञ, उपनिषद, उद्विग्न, वेदांग, तत्वरहित भौतिक भोग, सत्य-असत्य, आत्मसात आदि

प्रस्तावना:-

श्रीमद्भागवत गीता वर्तमान में भी उत्तनी ही प्रसांगिक है जितना की तब, जब इसका उपदेश श्रीकृष्ण ने अर्जुन को कुरुक्षेत्र की भूमि में उपदेश दिया था तव उसके लिए जितना उपयोगी सावित हुआ था, उतना ही आज के युग में भी है। जो राह भूले या मुश्किल में पड़े व्यक्ति को सही-गलत का अंतर वताकर उसके सोये नेत्रों को खोलने का कार्य करता है। जो

CORRESPONDING AUTHOR:	RESEARCH ARTICLE
Ravi Kumar Meena Asst.Professor, Sanskrit Literature Government College, Sidhmukh (Churu), Rajasthan Email: ravijhareda323@gmail.com	

मनुष्य को धर्म-अधर्म, कर्म, कर्मफल, जन्म-मृत्यु, हर्ष-शोक, सत्य-असत्य, आदि मनुष्य जीवन से जुडे हर समस्याओं का हल यताता है। जिसमें स्वयं श्रीकृष्ण ने केवल कर्म करने व फल की चिंता न करने की वात कही है।

भगवद्गीता की वर्तमान में प्रासंगिकता:-

श्रीमद्भागवत गीता महर्षि वेदव्यास जी द्वारा लिखा गया है। जिसमें 18 अध्याय और 700 श्लोक हैं। इसमें मनुष्य को अपने जीवन में आने वाले समस्याओं का सामना कैसे करना है, यह बताया गया है। गीता का उपदेश भगवान श्रीकृष्ण ने अर्जुन को उस समय सुनाया था, जब महाभारत युद्ध के समय अर्जुन ने युद्ध करने से मना करते हैं, तब श्रीकृष्ण अर्जुन को गीता का उपदेश देते है और धर्म व कर्म के सच्चे ज्ञान से उसे कर्म करने को प्रेरित करते है। भगवान श्रीकृष्ण के इन्हीं उपदेशों को "श्रीमद्भागवत गीता" नामक ग्रंथ में संग्रहित किया गया है। जिसमें सब वेदों का निचोड़ है। जो मनुष्य को कभी निराश न होने व सदैव आगे बढ़ने की प्रेरणा देता है।

आज के समय में ज्यादातर लोग चिंता, अवसाद और तनाव से ग्रस्त दिखते हैं । वढ़ती इच्छाओं की पूर्ति न होने पर क्षोभ और कुंठा होती है, तब आक्रोश और हिंसा का तांडव शुरू होने लगता है, दुखद वात तो यह है कि सहिष्णुता और धैर्य कमजोर पड़ने लगे हैं । आपसी रिश्ते, भरोसा और पारस्परिकता की डोर टूटती सी दिख रही है. धन-सम्पदा बढ़ रही है, शायद ज्यादा तेजी से और अधिक मात्ना में पर हर कोई वेचैन सा दिख रहा है। किसी के मन को शांति नहीं है, चैन नहीं है। इसकी खोज में लोग दौड़ लगा रहे हैं। अच्छे जीवन की तलाश जारी है, पर प्रसन्नता दूर ही भागती रहती है । तृप्ति नहीं मिलती, कुछ और पाने की दौड लगी रहती है और संतुष्टि नहीं होती। शांति के बदले कोलाहल बढ़ रहा है, अंदर भी और बाहर भी। यह भी पाया जाता है कि आर्थिक समृद्धि का जीवन संतुष्टि के साथ कोई सीधा और ठोस रिश्ता भी नजर नहीं है।

इसका कारण हैं अपने कार्य को सिर्फ लाभ के लिए करना । इन सबसे मनुष्य अहंकार और प्रतिस्पर्धा की भावना से युक्त होकर कार्य करता है, जिसकी बजह से मनुष्य हमेशा चिंता ग्रसित तथा भययुक्त रहता है कोई काम अपने आप में छोटा और बड़ा नहीं है। स्वामी विवेकानंद ने कहा है- कि मनुष्य के चरित्र का निर्माण उसके अच्छे या बुरे कर्मों से होता हैं, जब हमारा मन लाभ हानि के विचार से दूर हो कर कोई कार्य करेगा तो उसके परिणाम भी अच्छे होंगे और आप को एक आत्मसंतुष्टि मिलेगी, क्योंकि आपने अपने कार्य को पूजा बना लिया और आप अध्यात्म से जुड़ गए। बस जरूरत है अपने कार्य को बिना उसमें आसक्त हुए करने की, अर्थात फल की चिंता न करते हुए उसमें अपना पूर्ण मन लगाना।

श्रीमद्भागवत गीता में जीवन दर्शन:-

श्री मद्भागवत गीता एक ऐसा व्याख्यान है जिसने सामाजिक परिदृश्य में अपने महत्व को बनाए रख हुए हैं। इसी कारण व्यक्तित्व के विकास में इसकी उपलब्धता को बढ़ावा मिला है | इसने हमें अधिक बोधगम्य बनाने का प्रयास किया है श्रीमद्भगवद्गीता वर्तमान में धर्म से ज्यादा जीवन के प्रति अपने दार्शनिक दृष्टिकोण को लेकर भारत में ही नहीं विदेशों में भी लोगों का ध्यान अपनी ओर आकर्षित कर रही है निष्काम कर्म में गीता का संदेश प्रबंधन गुरुओं को भी लुभा रहा है।

श्रीमद्भगवद्गीता मनोवैज्ञानिक सिद्धांतों एवं आध्यात्मिक जीवन जीने की कला का एक सर्वांगपूर्ण ग्रंथ है जो वर्तमान समय में गीता की महत्ता अधिक है। आज का मानव तनाव एवं आंतरिक द्वंद से उद्विग्न एवं अशांत है। यह अंतर्द्वंद्व ही उसके समग्र मनोवैज्ञानिक जीवन की अपूर्णताओं का कारण है। अन्तःकरण की उत्कृष्टता ही व्यक्तित्व का वास्तविक मापदंड है। गीता में कर्म, ज्ञान और भक्ति की पद्धतिया व्यक्तित्व के विभिन्न न आयामों-स्थूल, सूक्ष्म, कारणों का उपचार करती है।

श्री गीता मानवता का अब तक का सबसे महत्त्वपूर्ण संविधान है । गीता जिस धर्म का सार है, उस धर्म को वैदिक धर्म कहते हैं। जिसमें प्राणीमात्र के लिए आनंदमय व शांतिपूर्ण जीवन का दर्शन है। संत ज्ञानेश्वर ने गीता जी पर कहा है कि गीता विवेक रूपी वृक्षों का एक अपूर्व बगीचा है। यह सब सुखों की नींव है। सिद्धांत रत्नों का भंडार है। नवरस रूपी अमृत से भरा हुआ समुद्र है। और सब विद्याओं की मूल भूमि है। वहीं भारतीय आध्यात्मिक चेतना के प्रेरणा पुंज स्वामी विवेकानंद ने कहा कि गीता उपनिषदों से चयन किए हुए आध्यात्मिक सत्य के सुंदर पुष्पों का गुच्छा है। गीता हमें एक सुरक्षित संकल्प देती है। वह संकल्प हमें मान्यताओं, जड़ हो चुकी प्रथाओं अंधविश्वासों और इतिहास के निर्णयों से मुक्त कर ऐसे वृहत्तर संसार में ले जाती है, जहां सुंदर भविष्य हमारी प्रतिक्षा कर रहा है, जहां विश्वास की अग्नि प्रज्वलित है, जहां अगणित संभावनाएं हमारे सामने खुलने के लिए खड़ी हुई मिलती है । हर युग में मानव के सामने कुरुक्षेत्र जैसी परिस्थितियां आती है लेकिन उनसे डटकर मुक़ाबला करना है तो उसके लिए सबसे सुलभ मार्ग गीता में दिया है | तस्मात्वमृस्तिष्ठ यशों लभस्व जित्वा शत्रून भुडक्ष्व राज्य समृद्धम । मयैवैते निहता पूर्वमेव निमित्त मात्रा भव सव्यसाचिन्। (पृ. 377, श्लोक 33) शरीर नित्य और आत्मा जनम मृत्यु रहित है। निष्काम कर्म, निष्काम भक्ति और ज्ञान सम्मिलित के फलस्वरूप ब्रह्म प्राप्ति और स्थित प्रज्ञा अवस्था होती है। इस अवस्था में स्थित होकर मनुष्य निष्काम भाव से अपने वर्ण और आत्मा के कर्म करके अंत में ब्रह्म निवारण या मोक्ष प्राप्त करते हैं। इस प्रकार गीता का ज्ञान हमें जीवन-पथ पर अग्रसर होने का संदेश देता है। यह जीवन दर्शन हमें कर्म करने का ही नहीं अपितु धर्मानुसार कर्म करने की ओर उन्मुख करता है। यदि हम अपना आचरण शुद्ध रखते हुए अच्छे कर्म करते हैं तो फल तो अवश्यमेव प्राप्त होगा-इसमें कोई संदेह नहीं है। गीता में हमें कर्म करो फल की इच्छा न करो-इसी दर्शन पर चलते हुए अपना जीवन-यापन करना चाहिए। आज आधुनिकता के परिवेश में यदि कोई हमें सदी राह दिखाकर सफलता की सीढ़ी चढ़ा सकता है तो वह गीता है इसमें कोई संदेह नहीं है।

उपसंहार:-

श्रीमदभगवद्गीता का हर एक पद व श्लोक वेद रूपी अमृत है। वर्तमान युग में भी गीता उतनी प्रासंगिक है जितने धर्म क्षेत्र महाभारत के समय थी। इस सुंदर जीवन रूपी दर्शन का उद्देश्य प्राणीमात्र का कल्याण करना है। नर से नारायण बनने की सरलतम प्रक्रिया इस भगवत ज्ञान में दी है। बस हमें अर्जुन जैसा जिज्ञासु बनकर इसको आत्मसात करना है। हर युग में मानव के सामने कुरुक्षेत्र जैसी परिस्थितियां आती है, लेकिन उनसे डटकर मुकाबला करना है तो उसके लिए सबसे सुलभ मार्ग गीता में दिया है | श्रीमद्भगवद्गीता की महिमा अनंत हैं। इस भगवत ज्ञान' का सारांश आसानी से इस श्लोक से प्रकट होता है -

एक शास्त्र देवकी पुत्र गीतम्।।
एको देवों देवकी पुत्र एव।।
एको मंत्रस्य नामानि यानि।।
कर्माप्यिकं तस्यै देवरय सेवा।।

श्रीमद्भगवद्गीता वर्तमान में धर्म से ज्यादा जीवन के प्रति अपने दार्शनिक दृष्टिकोण को लेकर भारत में ही नहीं विदेशों में भी लोगों का ध्यान अपनी और आकर्षित कर रही है। निष्काम कर्म का गीता का संदेश प्रबंधन गुरुओं को भी लुभा रहा है। वर्तमान भौतिक युग में युवाओं के लिए यह अमृत वाणी से कम नहीं है।

संदर्भ सुची :-

1. गीता के कर्मयोग की वर्तमान जीवन में प्रासंगिकता, कीर्ति भारद्वाज, 8 जनवरी 2017
2. वर्तमान समय में श्रीमदभागवत गीता की उपयोगिता,अजय सिंह नागपुर,15 दिसम्बर 2013
3. आधुनिक जीवन में गीता की उपादेयता, डॉ. रितेश गुप्ता, 30 जनवरी 2018
4. श्रीमदभगवदगीता, रूपेश ठाकुर, प्रसाद प्रकाशन,वाराणसी,अध्याय-4,श्लोक सं.-7 व 6
5. दास श्यामसुंदर,कबीर ग्रन्थावली,वाणी प्रकाशन,नयी दिल्ली,कस्तूरयों मृग को अंग, पृ-2
6. श्रीमद्भगवद्गीता, भाषा- टीका, रूपेश ठाकुर, प्रसाद प्रकाशन, वाराणसी, अध्याय-2, श्लोक संख्या-23 दास श्यामसुंदर, कबीर ग्रन्थावली, वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली, कस्तूरयों मृग को अंग, पृ-428
7. श्री सतगुरू ग्रन्थ साहिब, (सं.), आशीष कुमार पाण्डेय, लोकनाथ पब्लिकेशन,
8. श्रीमद्भगवदगीता, भाषा- टीका, रूपेश ठाकुर, प्रसाद प्रकाशन, वाराणसी, अध्याय-3, श्लोक संख्या- 9
9. श्री सत्तगुरू ग्रन्थ साहिब, अथ सरवंगी साक्षी का अंग, पू-206
10. दास श्यामसुंदर, कबीर ग्रंथावली, वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली, कस्तूरयों मृग को अंग, पृ- 77
11. श्री सत्तगुरु ग्रन्थ साहिब, अथ ब्रह्म चेदी, पृ-484

■ ■ ■